शब्द शक्ति की परिभाषा

शब्द में अर्थ सूचित करने की क्षमता को ही शब्द - शक्ति कहा जाता है । शब्दशक्ति में शब्द के ऐसे व्यापार पर विचार किया जाता है, जो शब्दार्थ बोध में सहायक होता है । इस प्रकार जिस शक्ति के द्वारा शब्द में अन्तनिहित अर्थ को स्पष्ट करने अथवा ग्रहण करने में सहायता मिलती है उस माध्यम को शब्द शक्ति कहते हैं।

शब्द शक्ति का अर्थ और परिभाषा -"शब्दार्थ सम्बन्धः शक्तिः" अर्थात शब्द और अर्थ के सम्बन्ध को शब्द शक्ति कहते हैं। शब्द शक्तियों के द्वाराहै[शब्द के अर्थ का बोध होता है। अतः शब्द शक्ति को निम्न प्रकार परिभाषित कर सकते हैं

शब्द शक्ति

= [शब्द और उसके अर्थ की शक्ति]

① अभिधा

② लक्षणा

③ व्यंजना

=) जब साहित्य में साहित्यकार अपनी बातों को बिना घुमाए-फिराये सीधे-सीधे कहता है और पाठक भी उसका अर्थ उसी अर्थ में या लोकप्रचलित अर्थ ग्रहण करता है तो इस प्रकार की रचना अभिधा रचना कहलाती है।

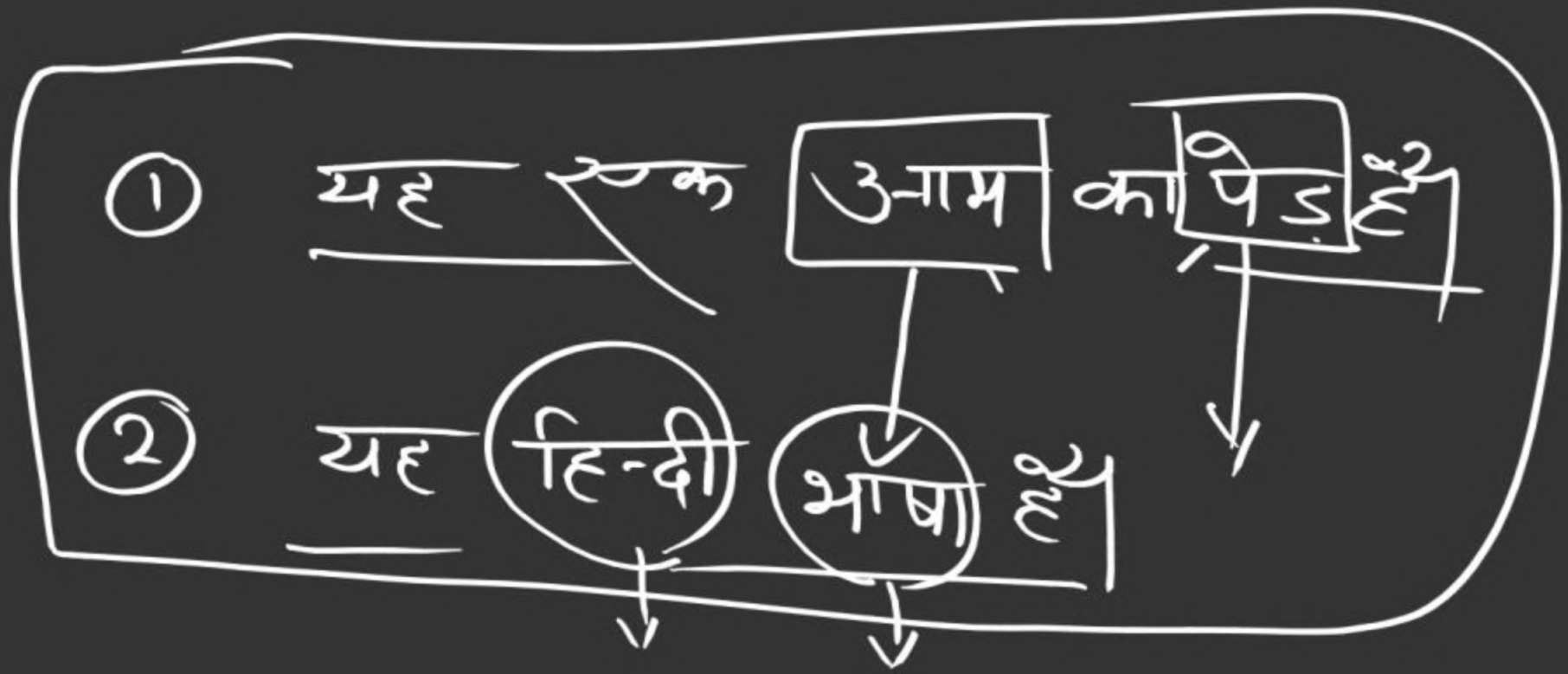
① यह एक नाम का पेड़ है
② यह हिन्दी भाषा है

= लक्षणा शक्ति

जहाँ पर साहित्यकार किसी बात कहने के लिए किसी व्यक्ति, वस्तु स्थान आदि के लिए उसके गुण, व्यवहार, और प्रयोग के आधार पर अन्य शब्द का प्रयोग करता है जिससे बात को समझने की आवश्यकता पड़ती

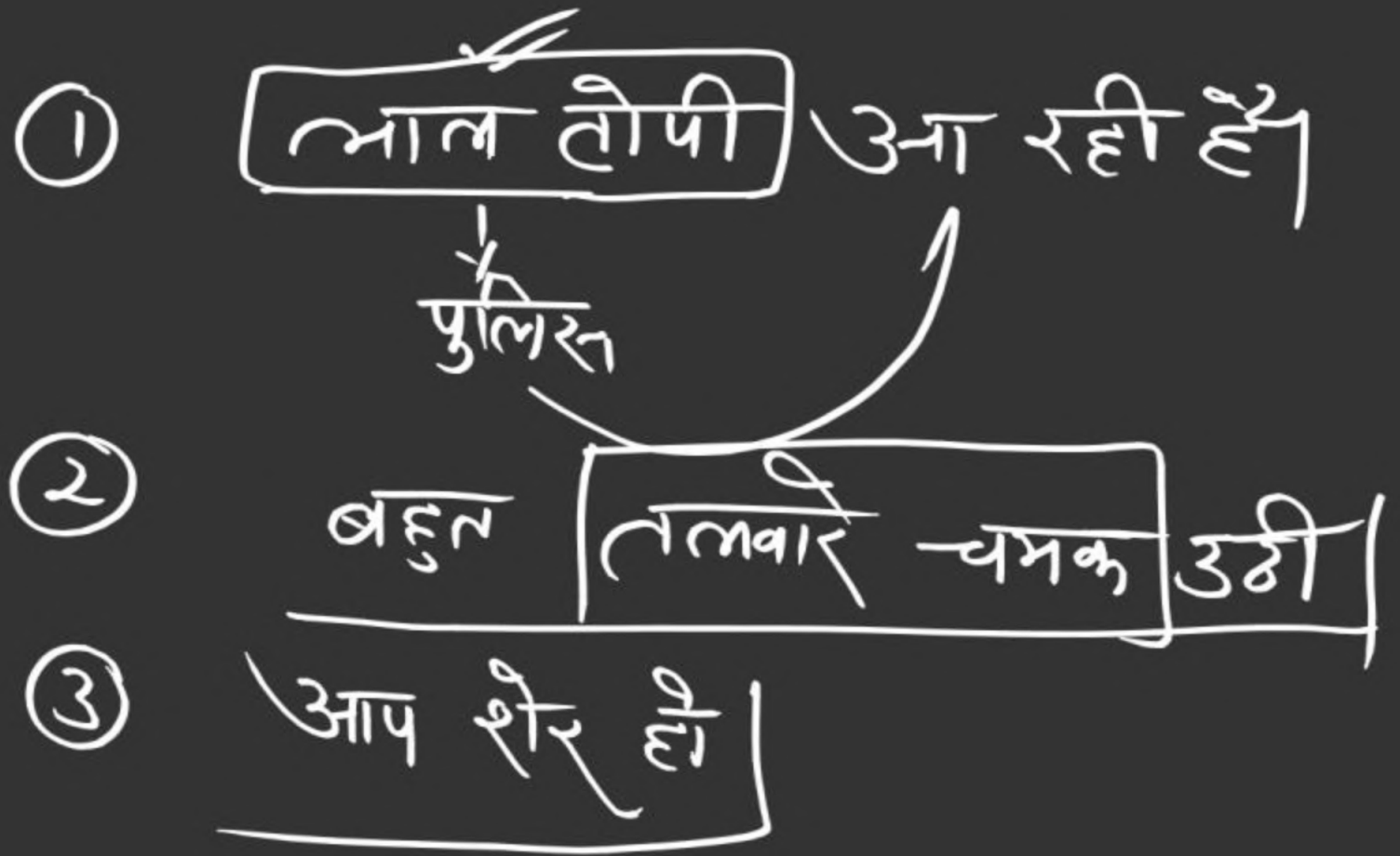
① लाल टोपी आ रही है।
पुलिस
② बहुत तलवारें चमक उठी।
③ आप शेर हो।

व्यंजना शब्द शक्ति

जब साहित्यकार अभिधा और लक्षणा का प्रयोग न करके एक इस प्रकार का साहित्य रचना करता है जिस एक शब्द एक से अधिक संदर्भ के अनुसार अर्थ ग्रहण किया जाता है वहा

=> रहिमन पानी राखिये बिनु पानी सब सून

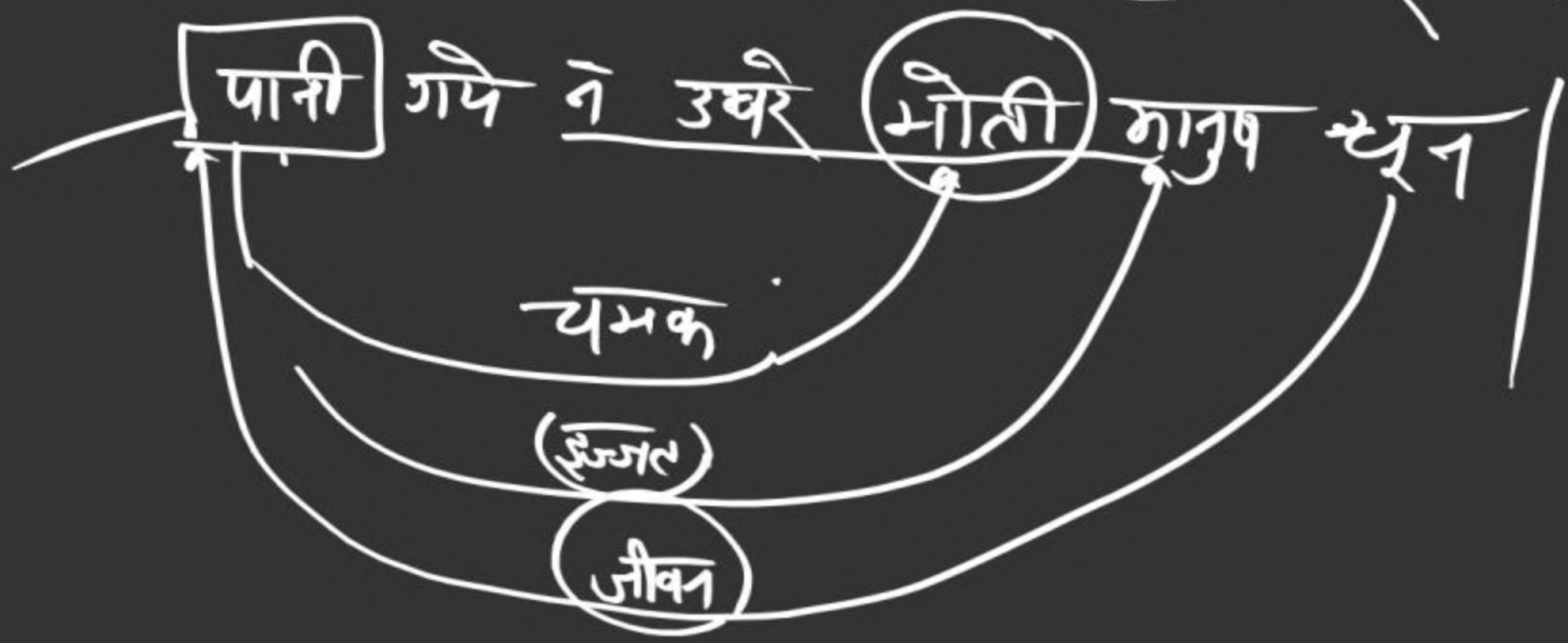

"शब्दों के अर्थों का बोध कराने वाले व्यापार शब्द शक्ति कहलाते हैं।

शब्द शक्ति के भेद-शब्द शक्तियां तीन प्रकार की होती हैं-

1. अभिधा, 2. लक्षणा, 3. व्यंजना।

2. इन तीनों से सम्बन्धित तीन प्रकार के शब्द होते है-

3. 1. वाचक, 2. लक्षक, और 3. व्यंजक

4. तथा इन तीनों से सम्बन्धित क्रमशः तीन की प्रकार के अर्थ होते है- 1. वाच्यार्थ, 2. लक्ष्यार्थ, और 3. व्यंग्यार्थ।

	शब्द	अर्थ	शब्द शक्ति
1	1. वाचक	वाच्यार्थ	अभिधा
2	2. लक्षक	लक्ष्यार्थ	लक्षणा
3	3. व्यंजक	व्यंग्यार्थ	व्यंजना

अभिधा शब्द शक्ति

शब्द को सुनकर या पढ़कर श्रोता या पाठक को उसका जो लोक प्रसिद्ध प्रचलित अर्थ तत्क्षण ज्ञात होता है उसे अभिधेयार्थ या वाच्यार्थ कहते है। इस अभिधेयार्थ का बोध कराने वाली शब्द शक्ति 'अभिधा' कही जाती है। अभिधा के द्वारा ज्ञात अर्थ कोशगत अर्थ होता है। जैसे- हमें फल खाने चाहिए। यहां फल का सामान्य अर्थ ग्रहण किया गया है अतः अभिधा शब्द शक्ति है।

2. लक्षणा शब्द शक्ति-

मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित होने पर मुख्यार्थ से ही सम्बन्धित जो अन्य अर्थ रूढ़ि अथवा प्रयोजन के आधार पर ग्रहण किया जाता है उसे लक्ष्यार्थ कहते हैं। लक्ष्यार्थ का बोध कराने वाली शब्द शक्ति लक्षणा शब्द शक्ति कहलाती है। यथा-मोहन गधा है इस वाक्य में 'गधा' शब्द का लक्ष्यार्थ है 'मूर्ख'। यह अर्थ इसलिए ग्रहण किया गया है, क्योंकि 'गधे' का मुख्यार्थ (एक जानवर) यहां बाधित हो रहा है। यह अर्थ एक विशेष प्रयोजन के आधार पर ग्रहण किया गया है,

3. व्यंजना शब्द शक्ति-

अभिधा और लक्षणा के विराम ले लेने पर जो एक विशेष अर्थ ध्वनित होता है, उसे 'व्यंग्यार्थ' कहते हैं। व्यंग्यार्थ का बोध कराने वाली शब्द शक्ति को व्यंजना कहते हैं। जैसे- उसका घर गंगा में है ।यहां घर गंगा में नहीं हो सकता, अतः अर्थ ग्रहण किया गया कि घर गंगा के निकट (तटवर्ती) है तथा इससे यह भी ध्वनित हो रहा है कि घर में गंगा जैसी पवित्रता, निर्मलता एवं शुद्धता है। यह ध्वनित होने वाला अर्थ ही व्यंग्यार्थ है //

शब्द शक्ति का महत्व

(1) शब्द शक्ति से ही अर्थ का बोध होता है।

(2) बिना अर्थ का उचित बोध किए काव्यार्थ की प्रतीति नहीं हो सकती है।

(3) (3) लक्षणा एवं व्यंजना से युक्त उच्चकोटि का माना जाता है।

(4) (4) जब सामान्य भाषा में कोई व्यक्ति अपनी बात नहीं कर पाता तो लक्षणा एवं व्यंजना का सहारा लेता है।

(5) (5) लक्षणा से भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता में वृद्धि होती है। भाषा केलक्षक एवं व्यंजक बल की सीमा अपरिमित है

शब्द शक्ति का महत्व

(1) (6) व्यंजना का व्यापार बहुत विस्तृत एवं व्यापक है। व्यंजना शक्ति के बल पर हम किसी भी शब्द से कोई भी काम ले सकते हैं।

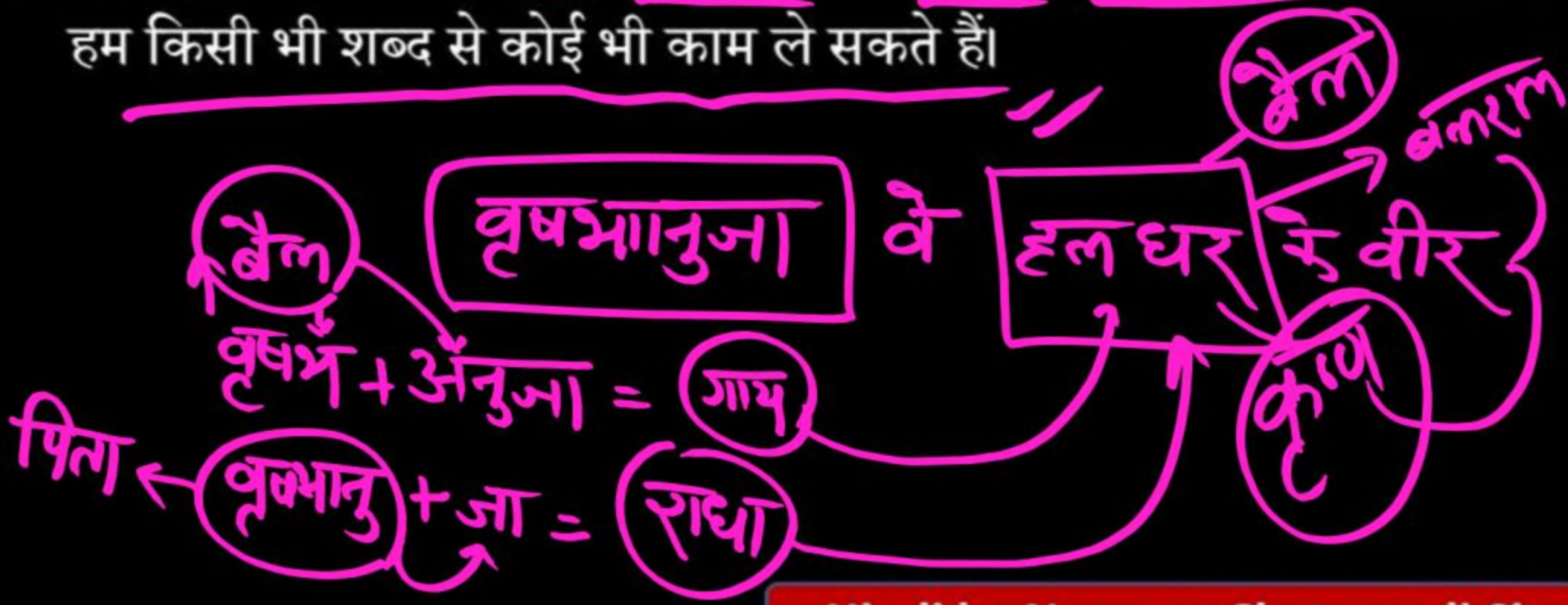

लक्षणा शब्द शक्ति के भेद

(अ) लक्ष्यार्थ के आधार पर इस आधार को लेकर लक्षणा के दो भेद हैं

(i) रूढ़ा लक्षणा

(ii) प्रयोजनवती लक्षणा।

लक्षणा शब्द शक्ति के भेद

(i) रूढ़ा लक्षणा-जहां मुख्यार्थ में बाधा होने पर रूढ़ि के आधार पर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है, वहां रूढ़ा लक्षणा होती है।

(ii) जैसे-पंजाब वीर है-इस वाक्य में पंजाब का लक्ष्यार्थ है-पंजाब के निवासी।

(iii) यह अर्थ रूढ़ि के आधार पर ग्रहण किया गया है अत: रूढ़ा लक्षणा है

लक्षणा शब्द शक्ति के भेद

(i) (ii) प्रयोजनवती लक्षणा-मुख्यार्थ में बाधा होने पर किसी विशेष प्रयोजन के लिए जब लक्ष्यार्थ का बोध किया जाता है,

(ii) वहां प्रयोजनवती लक्षणा होती है। जैसे-मोहन गधा है-इस वाक्य में 'गधा' का लक्ष्यार्थ 'मूर्ख' लिया गया है और यह मोहन की मूर्खता को व्यक्त करने के प्रयोजन से लिया गया है

(iii) अतः यहां प्रयोजनवती लक्षणा है।

लक्षणा शब्द शक्ति के भेद

(i) (ii) साध्यवसाना लक्षणा- इसमें केवल उपमान का कथन होता है, लक्ष्यार्थ की प्रतीति हेतु उपमेय पूरी तरह छिप जाता है। जैसे- जब शेर आया तो युद्ध क्षेत्र में गीदड़ भाग गए। यहां शेर का तात्पर्य वीर पुरुष से और गीदड़ का तात्पर्य कायरों से है। उपमेय को पूरी तरह छिपा देने के कारण यहां साध्यवसाना लक्षणा है

व्यंजना शब्द शक्ति के भेद

1. शाब्दी व्यंजना-
2. जहां शब्द विशेष के कारण व्यंग्यार्थ का बोध होता है और वह शब्द हटा देने पर व्यंग्यार्थ समाप्त हो जाता है वहां शाब्दी व्यंजना होती है।
3. जैसे-चिरजीवौ जोरी जुरै क्यों न सनेह गम्भीर। को घटि ए वृषभानुजा वे हलधर के वीर ।।